आर.एन.आई.नं. RAJBIL/2010/52404

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्य, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

सेवा सौभाग्य

पू. कैलाश जी 'मानव' | मूल्य » 5 | वर्ष » 13 अंक » 160 | मुद्रण तारीख » 1 अप्रैल 2025 | कुल पृष्ठ » 20

चण्डीगढ

दिल्ली

पटना

सुरत

हर सपनें को मिलेगी मंजील

भारत के विभिन्न शहरों में कृत्रिम अंग माप शिविर

अक्षय पुण्य का मौका

अक्षय तृतीया या आखा तीज वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को कहते हैं। इस बार यह तिथि 30 अप्रैल को है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार इस दिन जो भी शुभ कार्य किए जाते हैं, उसका अक्षय फल मिलता है। इस तृतीया का सर्वसिद्ध मुहूर्त के रूप में भी विशेष महत्व है। इस दिन किया गया जप, तप, हवन और दान भी अक्षय हो जाता है। भगवान श्री विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा विशेष फलदायी मानी गई। सतयुग और त्रेतायुग का आरंभ और महाभारत युद्ध व द्वापर का समापन इसी दिन हुआ। नर-नारायण, हयग्रीव, भगवान विष्णु के छठवें अवतार परशुराम का अवतार और ब्रम्हाजी के पुत्र अक्षय कुमार का अविर्भाव भी इसी दिन हुआ।

शुभ अक्षय तृतीया

दिनांक
30 अप्रैल
2025

Donate via UPI
₹5000
narayanseva@sbi

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
+91 294 662 2222 +91 7023509999

सेवा सौभाग्य

मुद्रण तारीख » 1 अप्रैल 2025
कुल पृष्ठ » 20

मूल्य » 5 वर्ष » 13 अंक » 160

सम्पादक मंडल

मार्ग दर्शक » कैलाश चन्द्र अग्रवाल
सम्पादक » प्रशान्त अग्रवाल
सहयोग » विष्णु शर्मा हितैषी
भगवान प्रसाद गौड़
डिजाइनर » विरेन्द्र सिंह राठौड़

सम्पर्क (कार्यालय)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva

Sewa Parmo Dharm
MAKE GIVING YOUR HABIT

483, 'सेवाधाम' सेवा नगर,
हिरण मगरी, सेक्टर-4,
उदयपुर (राज.) 313002, भारत
फोन नं. +91-294-6622222,
वाट्सऐप: +91-7023509999
Web www.spdtrust.org
E-mail info@spdtrust.org

Seva Soubhagya Print Date 1 April, 2025 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404 Postal Reg. No. RJ/UD/29-146/2023-2025. Despatch Date 1st to 7th of every month, Chetak Circle Post Office, Udaipur, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur - 313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages- 20 (No. of copies printed 1,50,000) cost- Rs.5/-

CONTENTS

इस माह में

अक्षय तृतीया पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

सम्मानित पाठक बन्धुओं के लिए

समरसता के मार्गदर्शक भगवान महावीर

याशिका के सपनों को मिले पंख

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़े कदम

'वर्ल्ड क्लास' कृत्रिम अंग योजना

चिल्ड्रन एकेडमी का वार्षिकोत्सव

कृत्रिम अंग माप शिविर

अपेक्षित है सार्थक पहल

देश में असंख्य लोग आज शारीरिक रूप से अक्षम हैं- निःशक्त हैं, जिनको प्रोत्साहन की जरूरत है। ये भी सामान्य जन की तरह जिन्दगी को भरपूर जीना ही नहीं चाहते बल्कि समाज के विकास में अपना योगदान करने को भी लालायित हैं।

जब तक समाज में अशक्त, दीन-हीन और पीड़ित व्यक्ति हैं, तब तक समाज का यह कर्तव्य बन जाता है कि उनके दुःख निवारण में पहल करे। यह हो भी रहा है लेकिन जितनी बड़ी दुनिया है, उतने ही बड़े दुःख हैं। समाज के सुखी होने में ही व्यक्ति का सुख है। जब हम अपने से कमजोर व्यक्ति या वर्ग की सेवा का भाव लेकर आगे बढ़ेंगे तो प्रभु कृपा से समृद्धि और सम्पन्नता स्वतः हमारे द्वार पर दस्तक देगी। प्रकृति का यह शाश्वत नियम भी है। जो देता है, वही पाता है। हम अपनी कमाई का अंश, अपनी सामर्थ्य के अनुसार परमार्थ में अवश्य लगाएं। स्वर्ग के देवदूतों ने एक दिन परमपिता के समक्ष जिज्ञासा प्रकट की कि-'प्रभो! क्या संसार में ऐसी कोई वस्तु है, जो चट्टान से भी अधिक कठोर हो?' प्रभु ने उत्तर दिया-' लोहा चट्टान से भी अधिक कठोर होता है, क्यों कि वह उसे तोड़ देता है।' 'और क्या ऐसी भी कोई चीज़ है, जो लोहे से भी कठोर और मजबूत हो।' देवदूतों ने पुनः पूछा। उत्तर मिला 'हाँ, अग्नि! क्यों कि यह लोहे को पिघला देती है।' अब प्रभु के सामने प्रश्न था- अग्नि से कठोर क्या है, प्रभु!' प्रभु का उत्तर था- पानी, जो अग्नि को बुझा डालता है', देवदूतों की जिज्ञासा बढ़ती ही गई। उन्होंने पुनः पूछा -' पानी को भी मात देने वाली क्या कोई वस्तु है? भगवान ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया - हाँ है, हवा जो जल के प्रवाह को तरंग के रूप में बदल देती है। वह मेघों को भी जब चाहे इकट्ठा या भिन्न कर सकती है।' देवदूतों के प्रश्न की श्रृंखला और आगे बढ़ी, उन्होंने पूछा- 'हे परमपिता! अब भी ऐसी कोई चीज है, जो इन सबकी अपेक्षा अधिक बलवान हो।' प्रभु ने उत्तर दिया- ' हाँ-हाँ, वह दयालु हृदय जो दूसरों की पीड़ा देखकर द्रवीभूत हो उठता है और उसकी सहायता के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान देता है। जीवन की सार्थकता के लिए दान ही सबसे कारगर है। जो ऐसा करते हैं, उन पर मेरी कृपा विशेष होती है।'

बन्धुओं! इंसान वही है, जो दूसरे इन्सान के काम आए। यूं कहने को तो पूरी दुनिया इंसानों से भरी है, मगर जीवन उन्हीं का सार्थक है, जिनमें मानवीय संवेदना है, जिनके हृदय में दया और करूणा है। करूणा, प्रेम और सद्भाव की धुरी पर टिका समाज ही आगे बढ़ता है। देश में असंख्य लोग आज शारीरिक रूप से अक्षम हैं- निःशक्त हैं, जिनको प्रोत्साहन की जरूरत है। ये भी सामान्य जन की तरह जिन्दगी को भरपूर जीना ही नहीं चाहते बल्कि समाज के विकास में अपना योगदान करने को भी लालायित हैं, किन्तु शारीरिक अक्षमता और गरीबी इनकी राह का बड़ा रोड़ा है, जिसे आप और हमें मिलकर हटाना है। इन्हें इनके पांवों पर खड़ा करना और आत्मनिर्भर बनाना है। आपके अपने इस संस्थान के माध्यम से पिछले चालीस वर्ष में आपके दान-सहयोग से बड़ी संख्या में निःशक्त-निर्धन अपना जीवन संवार चुके हैं, सेवा की इस यात्रा के निरन्तर आगे बढ़ने में आपका आशीर्वाद बना रहे।

जय नारायण !

सेवक प्रशांत भैया

प्रकृति और परमार्थ

प्रकृति भी अपनी निस्वार्थ वृत्ति से मानव जाति को पाठ पढ़ाती है। परमार्थ के लिए आत्म बलिदानी महापुरूषों की गौरव गाथाओं से हमारे देश का इतिहास देदीप्यमान है।

सेवा की नहीं जाती स्वतः होने लगती है। सेवा के भाव उसी व्यक्ति में जाग्रत होते हैं, जो अपने साथ दूसरों की कुशलक्षेम की भी परवाह करते हैं। सेवा जैसे पुनीत कार्य के लिए न तो मुहूर्त्त की जरूरत है और न ही किसी चौघड़िया की। दीन-दुःखी व असहाय को सम्बल देना मानवीय दृष्टि से पुनीत कार्य है, लेकिन यह जिसके हाथ से हो उसके दूसरे हाथ को उसका पता भी नहीं लगना चाहिए।

प्रकृति भी अपनी निःस्वार्थ सेवा से मानव जाति को परोपकार का पाठ पढ़ाती है। सूर्य अपनी ऊष्मा द्वारा जीव-जगत को जीवनदान देने में निरन्तर व्यस्त रहता हैं। पृथ्वी प्राणी मात्र के उत्पात को सहते हुए भी उन्हें अपनी गोद में सहेजे रहती है। चन्द्रमा, वायु, बादल, वृक्ष, नदियां आदि प्रकृति के नाना उपादान किसी-न-किसी रूप में संसार के कल्याण में सचेष्ट हैं। किसी ने अपनी सेवा के बदले कभी किसी से कोई मांग नहीं की। परोपकार के लिए आत्म बलिदान करने वाले महापुरूषों की गौरव गाथाओं से हमारे देश का इतिहास देदीप्यमान है। नागों की रक्षा के लिए अपने जीवन का दान करने वाले जीमूतवाहन, कबूतर के प्राण बचाने के लिए अपने शरीर का मांस देने वाले राजा शिवि, याचक रूप में उपस्थित इन्द्र को शरीर का कवच-कुण्डल दान करने वाले वीरवर कर्ण, गो रक्षार्थ अपना शरीर समर्पित करने वाले राजा दिलीप, स्वयं भूखे होने के बावजूद अपना अन्न-जल दान करने वाले महाराज रंतिदेव के नाम को क्या कभी भुलाया जा सकता है? आज भी दानवीर पुरूषों से यह भारत भूमि गौरवान्वित है। परोपकारी प्राणी को ही संत कहा जाता हैं क्योंकि परहित संत का सहज स्वभाव होता है। नदी में बहने वाले बिच्छु को बचाने वाले संत का दृष्टान्त तो सुविदित ही है, जो बिच्छु के दंश के बावजूद यही कहकर बार-बार उसे बचाते रहे कि बिच्छु का स्वभाव ही डंक मारना है एवं मेरा स्वभाव जीव की सेवा और रक्षा करना है। परोपकारी व्यक्ति कभी भी घाटे में नहीं रहता। जनक नंदिनी एवं प्रभु श्रीराम की भार्या माता सीता को रावण द्वारा अपहरण होते देख जटायु ने उसे बचाने में अपने प्राण यह जानते हुए भी झोंक दिए कि उसकी मृत्यु निश्चित है फिर भी वह परमार्थ-पथ पर बढ़ने से विचलित नहीं हुए। प्राणों की आहूति तो देनी पड़ी किन्तु उसे वह देव-दुर्लभ सद्गति भी प्राप्त हो गई, जो सुकृति, ज्ञानी, योगियों को भी सहज प्राप्त नहीं होती।

पूज्य श्री कैलाश 'मानव'

समरसता के मार्गदर्शक भगवान महावीर

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर को मानव समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का श्रेय जाता है। उन्होंने धर्म की एक बिल्कुल अलग परिभाषा दी, लोगों को अहिंसा का पाठ पढाया, नारी का सम्मान और उन्हें बराबरी का दर्जा देना सिखाया। उनकी सीख आज के संदर्भ में भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी 599 ईसा पूर्व में थी। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, क्षमा और धर्म का पाठ पढ़ाने वाले भगवान महावीर का जन्म ईसा से 599 वर्ष पूर्व चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी तिथि को बिहार में लिच्छवीं वंश के महाराज श्री सिद्धार्थ और माता त्रिशिला देवी की तीसरी संतान के रूप में हुआ था।

यह वह वक्त था, जब देश में अंधविश्वास का अंधकार छाने लगा था, पशुबलि व हिंसा का बोलबाला था, मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा था, परस्पर सहयोग एवं सौहार्द्र का स्थान ईर्ष्या व द्वैष ने लिया था। धीरे-धीरे बड़े होते, वर्धमान (माता-पिता द्वारा बचपन में रखा गया नाम) इन सबसे व्यथित हो गए थे। राजपाट का मोह उन्हें पहले भी बांध नहीं पाया था और अंततः 30 वर्ष की आयु में वह तपस्या के लिए घने जंगल में निकल पड़े। घने वन में ज्ञान की खोज करते उन्होंने वस्त्र तथा भिक्षा पात्र तक का त्याग कर दिया।

उन्होंने कठोर तप के द्वारा अपनी समस्त इंद्रियों पर विजय प्राप्त की और इसलिए वह विजेता यानी महावीर कहलाए। भगवान महावीर अहिंसा व अपरिग्रह की साक्षात मूर्ति थे।

भगवान महावीर के चार प्रमुख सिद्धांत-

पहला सिद्धांत- समानता। यह समानता उन्होंने देह, रंग, लिंग या भाषा के आधार पर नहीं की, बल्कि उनकी समानता की दृष्टि आत्मिक समानता की अनुभूति से पगी हुई थी। सैद्धांतिक तौर पर भी देखें तो जब तक आत्मिक समानता की अनुभूति नहीं होती, तब तक अहिंसा कैसे सफल हो सकती है?

दूसरा सिद्धांत-प्रत्येक को आत्मनिर्णय का अधिकार। भगवान महावीर कहते हैं कि हमारे भाग्य का निर्णय किसी दूसरी सत्ता के हाथ में हो, यह हमारी स्वतंत्रता के प्रतिकूल है। अब हमें यह निर्णय करना है कि हम होना क्या चाहते हैं? ऐसा चाहना सिर्फ वही कर सकता है जो आत्मनिर्णय के अधिकार से संपन्न हो।

तीसरा सिद्धांत-आत्मानुशासन। एक ओर जहां उन्होंने स्वतंत्र रहने की बात कही, वहीं दूसरों को डरा-धमका कर हुकूमत करने से भी साफ-साफ इनकार किया। भगवान महावीर कहते हैं कि यदि हमें हुकूमत करनी ही है तो अपने आप पर करें। बंधन किसी को भी स्वीकार्य नहीं है, इसलिए भगवान महावीर ने पूरी दृढ़ता के साथ यही कहा कि जीतना है तो स्वयं को जीतो। औरों को जीतने के परिणाम में प्रतिहिंसा ही होती है।

चौथा सिद्धांत -सापेक्षता। इसका अर्थ है सबको समान अवसर। इसी के द्वारा सत्य का ज्ञान और उसका निरूपण होता है। हमें सुखद शासन की यदि अपेक्षा है तो औरों के अधिकार सुरक्षित रहें, उनकी आत्मा में असंतोष की ज्वाला न धधके।

सक्सेस स्टोरी

याशिका के सपनों को मिले पंख

मध्य प्रदेश के गुना नगर की निवासी याशिका जैन (10) हमेशा से खुशमिजाज और जिज्ञासु रही है। उसके नन्हे हाथ कभी अपने सपनों को साकार करने की ओर बढ़ते, तो कदम खेल के मैदान में दौड़ लगाते। लेकिन किस्मत उसकी राह का रोड़ा ही बनती रही। जन्म के समय सामान्य दिखने वाली याशिका के पैरों ने कुछ समय बाद उठना और बढ़ना धीरे-धीरे बंद कर दिया। ग्यारह साल की हुई, तो घुटने मुड़ने लगे, और चलना मुश्किल हो गया।

दुःखी परिवार की नजरें हमेशा उस पर सवाल बनकर टिकी रहीं, लेकिन याशिका ने बावजूद पीड़ा के अपनी मुस्कान को कभी फीकी नहीं पड़ने दिया। उसने अपने दर्द को कमजोरी नहीं, बल्कि अपनी ताकत बनाया। माता-पिता की चिंता बढ़ती गई, लेकिन उन्होंने भी हार नहीं मानी। घर में खर्चा कम करके भी उसका इलाज करवाते रहे, हालांकि परिणाम शून्य ही रहा। किसी शुभचिंतक से उन्हें नारायण सेवा संस्थान के बारे में एक दिन पता चला और वे याशिका को लेकर उदयपुर पहुंचे। संस्थान में विशेषज्ञ डॉक्टरों ने न केवल उसका निःशुल्क ऑपरेशन किया, बल्कि उसे सहारा और आत्मविश्वास भी दिया। प्यार और देखभाल की छांव में धीरे-धीरे उसकी जिंदगी खिलने लगी। जिन्होंने कभी यह मान लिया था कि चलना उसके लिए सपना बन जाएगा, आज वे यह देखकर अचंभित थे कि वह पैरों पर न केवल खड़ी होकर चल रही है, बल्कि अपने सपनों को उत्साह के पंख देकर नई उड़ान भरने के लिए भी तैयार है। यशिका का कहना है- 'अब मैं डॉक्टर बनकर ऐसे ही बच्चों की मदद करना चाहती हूँ, जिन्हें दुनिया बोझ समझती है।'

यशिका की यह कहानी सिर्फ उसकी जीत की नहीं, बल्कि उन सभी के लिए उम्मीद की किरण है, जो अपनी तकलीफों से हार मान चुके हैं। नारायण सेवा संस्थान ने उसे नया जीवन दिया और अब वह अपनी उड़ान तय करने को आतुर है - बहुत ऊपर आसमान तक!

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़े कदम

छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले की फाल्गुनी पटेल की जिंदगी बचपन से ही कठिनाइयों से भरी रही। मासूम उम्र में पोलियो ने उनके दाहिने पैर को कमजोर कर दिया जिससे उनके लिए सामान्य तरीके से चलना लगभग असंभव हो गया। वह घुटनों पर हाथ रखकर धीरे-धीरे चलती लेकिन हर कदम एक संघर्ष था।

परिवार की आर्थिक स्थिति भी बेहद कमजोर थी। उनके पिता दिहाड़ी मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण करते थे जबकि माँ घर के कामकाज संभालती थी। सीमित साधनों के बावजूद, माता-पिता ने देखभाल में कोई कमी नहीं छोड़ी, लेकिन महंगा इलाज कराना उनके लिए संभव नहीं था।

एक दिन, फाल्गुनी के पिता को गांव के एक व्यक्ति से संस्थान के निःशुल्क उपचार और पुनर्वास प्रकल्पों के बारे में पता चला। यह जानकारी उनके लिए आशा की एक किरण थी। बिना देर किए उन्होंने फाल्गुनी को लेकर संस्थान का रूख किया। संस्थान में विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने उसकी जाँच की और ऑपरेशन की सलाह दी। यह वो पल था, जब उनकी तकलीफों के अंत की शुरूआत हुई। सफल ऑपरेशन के डेढ़ माह बाद, अब फाल्गुनी कैलिपर्स के सहारे आराम से चल सकती हैं। उनके चेहरे पर अब खुशी की चमक और एक ऐसा सुखद एहसास है, जिसे शब्दों में बयान करना मुश्किल है। लेकिन यह सिर्फ एक शारीरिक सुधार नहीं था, यह उनकी आत्मनिर्भरता की यात्रा की पहली सीढ़ी थी। संस्थान में रहते हुए, फाल्गुनी को यहां संचालित निःशुल्क सिलाई प्रशिक्षण केंद्र के बारे में पता चला। आत्मनिर्भर बनने की चाह ने उन्हें त्रैमासिक सिलाई प्रशिक्षण कोर्स में प्रवेश लेने के लिए प्रेरित किया। अब वह हुनर सीख रही हैं, ताकि खुद के पैरों पर खड़ी होकर सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें। वह कहती हैं कि 'संस्थान और दानदाताओं के सहयोग से ही मुझे सकलांग जिंदगी मिली है। अब मेरा सपना है कि मैं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनूँ और अपने जीवन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाऊँ।

'वर्ल्ड क्लास' कृत्रिम अंग योजना पर संस्थान कर रहा काम

मनुष्य को वाणी का उपयोग सोच-समझकर करना चाहिए। यह कहीं अमृत तो कहीं विष का काम करती है।' संस्थान के तत्वावधान में 27 फरवरी से 1 मार्च तक आयोजित 'अपनों से अपनी बात' कार्यक्रम के पहले दिन संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया ने उक्त बात कही। उन्होंने कहा कि व्यक्ति अपने मधुर वचन और व्यवहार से दुःखी, निराश और पीड़ित व्यक्ति में जहां नव जीवन का संचार कर सकता है वहीं कटु वचन से वह उसे और दुःखी बना देगा, साथ ही स्वयं भी क्रोध और दोष का भागी बनेगा।

कार्यक्रम में देश के विभिन्न प्रांतों से निःशुल्क दिव्यांगता सुधार सर्जरी एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पैर) प्राप्त करने आए दिव्यांग भाई - बहन उपस्थित थे। जिन्होंने अपनी दिव्यांगता से सम्बद्ध घटना-दुर्घटना एवं अनुभवों को भी साझा किया।

दूसरे दिन के प्रवचन में भैया जी ने कहा कि पीड़ित और दुःखी व्यक्ति को सुखी, संतुष्ट और सन्तृप्त बनाने में सहयोगी बनना ही परमधर्म है। उन्होंने कहा कि सेवा कार्य में अहंकार का कोई स्थान नहीं है। देने वाला प्रभु है अन्यथा व्यक्ति में क्या सामर्थ्य है कि वह किसी को कुछ दे सके। हमारा जीवन तो परीक्षा कक्ष में तीन घड़ी का पेपर देने वाले परीक्षार्थी जैसा है, बचपन, जवानी और बुढ़ापा। इसके बाद सब खत्म। जो रह जाएंगे वे पुण्य कर्म होंगे, जिन्हें समाज सदैव याद करेगा।

समापन कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि नारायण सेवा संस्थान ने अपनी स्थापना से ही यह संकल्प लिया हुआ है कि जब तक समाज में दिव्यांगता रहेगी तब तक संस्थान की सेवा यात्रा भी अनवरत रहेगी। संस्थान दिव्यांगों को 'वर्ल्ड क्लास' कृत्रिम अंग उपलब्ध कराने की योजना पर काम कर रहा है। इस कार्यक्रम का तीनों दिन संस्कार चैनल से देश भर में सीधा प्रसारण किया गया।

आठ मार्च की शाम बच्चों व महिलाओं के नाम

संस्थान ने उल्लास से मनाया महिला दिवस व चिल्ड्रन एकेडमी का वार्षिकोत्सव

नारायण सेवा संस्थान के लियों का गुड़ा स्थित सेवा महातीर्थ परिसर में 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं नारायण चिल्ड्रन एकेडमी का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया।

समारोह का शुभारंभ संस्थान संस्थापक-चेयरमैन पूज्य गुरूदेव श्री कैलाश जी 'मानव', सहसंस्थापिका कमलादेवी जी, अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया व अतिरिक्त निदेशक पेंशन एवं पेंशनर्स कल्याण श्रीमती रूचि प्रियदर्शी ने गणेश वंदना के दौरान दीप प्रज्जवलन कर किया।

अतिथियों का स्वागत करते हुए सेवक प्रशांत भैया ने कहा कि महिलाओं के अधिकार, समानता और सशक्तीकरण की थीम पर आयोजित इस समारोह में राष्ट्र के विकास और नारी सशक्तीकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए शहर की महिला विभूतियों को सम्मानित कर हम गौरवान्वित हैं। नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बारे में उन्होंने कहा कि अंग्रेजी माध्यम के इस डिजिटल विद्यालय में गरीब व आदिवासी क्षेत्र के 600 विद्यार्थी निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। समारोह में बच्चों ने अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से दर्शकों को

मंत्रमुग्ध कर दिया। शिक्षा एवं शैक्षणेतर गतिविधियों में उपलब्धियां हासिल करने वालों को पुरस्कृत किया गया। वार्षिक प्रतिवेदन विद्यालय प्राचार्या श्रीमती अर्चना गोवलकर ने प्रस्तुत किया। महिला दिवस पर विशिष्ट अतिथि रूचि प्रियदर्शी, प्रतिभा नागदा प्रधान बडगांव व प्रियंका सुथार सरपंच लोयरा को पगड़ी, शाल, उपरणा व स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। पूज्य गुरूदेव ने कहा कि आज के बच्चे ही कल के भारत का भविष्य हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी समाज के सभ्य होने का सबसे बड़ा पैमाना यह है कि वह स्त्रियों का सम्मान करे। सह-संस्थापिका कमलादेवी जी ने कहा कि आज का समारोह लगातार अपने मिशन में आगे बढ़ने का एक अभियान है। संचालन एकेडमी के विद्यार्थियों लताशा, लक्ष एवं दिव्यांशी ने श्री महिम जैन के निर्देशन में किया।

सड़क अथवा अन्य हादसों में हाथ-पांव गंवाने वाले बंधु-बहिनों को अत्याधुनिक कृत्रिम अंग उपलब्ध कराने की दृष्टि से संस्थान द्वारा देश के महानगरों में अंग मापन शिविर आयोजित किए गए। जिनमें 2600 से अधिक दिव्यांगजनों ने भाग लिया। इनमें से 1612 का निःशुल्क कृत्रिम अंग व कैलिपर्स उपलब्ध कराने के लिए माप लिया गया। इसके साथ ही 554 का दिव्यांगता सुधार सर्जरी के लिए चयन किया गया।

दिल्ली - रोहिणी स्थित गोल्डन क्रॉउन जापानीज पार्क में 16 फरवरी को निःशुल्क ऑपरेशन जाँच-चयन और नारायण लिंब व कैलिपर्स माप शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें 570 दिव्यांगजन की उपस्थिति रही। शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन के प्रबंध निदेशक श्री महेश जी कंडे व उद्यमी श्री त्रिलोकीनाथ जी गोयल, विशिष्ट अतिथि श्री दयालु जी महाराज, श्री भीमसेन जी मित्तल, एनटीपीसी की हेड श्रीमती संगीता जी, सीएसआर डिंपी जी व अध्यक्षता कर रहे समाज-सेवी श्री सत्यभूषण जी जैन ने किया। अतिथियों का स्वागत-सम्मान संस्थान के निदेशक-ट्रस्टी श्री देवेंद्र जी चौबीसा ने किया। शिविर प्रभारी श्री जतन सिंह भाटी व श्री हरी प्रसाद लड्ढा थे। शिविर में प्रोस्थेटिक एवं ओर्थोटिस्ट हैड डॉ. प्रवंजन साहू की देखरेख में 210 दिव्यांगों का नारायण लिंब और 141 का कैलिपर्स बनाने के लिए माप लिया गया। संस्थान के डॉक्टर बी.एल. शिंदे ने 101 निःशक्तजन का निःशुल्क सर्जरी के लिए चयन किया, जिनका ऑपरेशन उदयपुर स्थित संस्थान के चिकित्सालय में शीघ्र संपन्न होगा। कृत्रिम अंग करीब दो माह बाद दिल्ली में पुनः शिविर आयोजित कर लगाए जाएंगे।

सूरत - टीएम पटेल इंटरनेशनल स्कूल व श्री शांता बेन त्रिभुवनदास पटेल चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से 23 फरवरी को अलधान-भटार सामुदायिक भवन में संपन्न शिविर में 482 से अधिक दिव्यांगजन ने भाग लिया। इसमें से 282 का नारायण कृत्रिम हाथ-पैर और 80 का कैलिपर्स लगाने के लिए टेक्नीशियनों ने माप लिया। जबकि 88 का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया

गया। शिविर का उद्घाटन क्षेत्रीय सांसद श्री मुकेश भाई दलाल, विशिष्ट अतिथि उधना के विधायक श्री मनु भाई पटेल, श्री शांताबेन त्रिभुवन दास पटेल ट्रस्ट के ट्रस्टी धर्मेंद्र भाई पटेल, टीएम इंटरनेशनल स्कूल के अध्यक्ष हरीश भाई, समाजसेवी श्री मनसुख भाई धड़क व श्रवण जी अग्रवाल ने दीप प्रज्वलन कर किया। संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत-सम्मान करते हुए संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी। कार्यक्रम में कृत्रिम पांवों पर जान्हवी के नृत्य पर सभी अचंभित रह गए। सूरत आश्रम के प्रभारी श्री अचल सिंह भाटी ने शिविर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जबकि ट्रस्टी निदेशक श्री देवेंद्र जी चौबीसा ने आभार प्रदर्शन व संचालन ऐश्वर्य त्रिवेदी ने किया।

चंडीगढ़ – सेक्टर-49सी स्थित सामुदायिक भवन में 2 मार्च को आयोजित शिविर में 450 से अधिक दिव्यांगजनों ने भाग लिया। जिनमें से 300 से ज्यादा दिव्यांगों का नारायण कृत्रिम अंग और कैलीपर लगाने के लिए माप लिया गया। करीब 70 का दिव्यांगता सुधार सर्जरी के लिए चयन हुआ। शिविर का उद्घाटन भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री संजय जी टंडन, बाल अधिकार संरक्षण आयोग की चेयरपर्सन शिप्रा जी बंसल व पार्षद श्री राजेंद्र जी शर्मा ने किया।

संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने संस्थान की 40 वर्षीय सेवा यात्रा की जानकारी के साथ अतिथियों का पाग, उपरणा पहनाकर व स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत - सम्मान किया। इस मौके पर संस्थान के दानदाता श्री हरबन लाल जी छाबड़ा, श्री

रामकृष्ण जी शर्मा, श्री रामगोपाल जी यादव, किरण जी सिंघल, श्री एस. सी. अग्रवाल, श्री सुभाष जी गर्ग, श्री एस.पी. मल्होत्रा जी भी मंचासीन थे। जिनका पीआरओ भगवान प्रसाद गौड़ द्वारा सम्मान किया गया। संचालन आदित्य चौबीसा ने किया।

पटना – रिसोर्ट 'आशियाना' में 9 मार्च को संपन्न शिविर में 300 दिव्यांगजन का निःशुल्क सर्जरी के लिए एवं 651 का नारायण कृत्रिम अंग एवं कैलिपर्स लगाने के लिए चयन किया गया। शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि सार्वजनिक निर्माण मंत्री नितिन नवीन जी, स्थानीय विधायक डॉ. संजीव जी चौरसिया व विशिष्ट अतिथि समाजसेवी सर्व श्री कृष्णगोपाल जी, मनोज जी अग्रवाल, प्रदीप जी बर्नलवाल, पवन जी केसरी, साधु शरण जी, लक्ष्मण जी टेकरीवाल एवं राहुल रंजन जी ने किया। संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए उनसे शिविर में आए दिव्यांगजन से मिलवाया।

मुख्य अतिथि ने उन्हें आश्वस्त किया कि बिहार में संस्थान को दिव्यांगजन के हितार्थ हर प्रकल्प में राज्य सरकार सहयोग करेगी। शिविर प्रभारी श्री हरि प्रसाद लड्ढा व श्री दिग्विजय सिंह ने आभार व्यक्त किया।

झीनी झीनी रोशनी

[70]

कैलाश जी इनसे काफी देर तक चर्चा करते रहे। शांतिकुंज के किसी प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने की उनकी इच्छा और प्रबल हो गई। इस व्यक्ति से ही पता चला कि शीघ्र ही वहां एक माह का एक शिविर आयोजित होने वाला है। उन्होंने तुरन्त एक पत्र लिख कर आवेदन कर दिया और उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे। जबलपुर में शिविर समाप्त कर वे उदयपुर लौटे ही थे कि हरिद्वार से उन्हें अनुमति पत्र मिल गया। एक माह के प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने हेतु उनका आवेदन स्वीकार हो गया था। उन्होंने महीने भर की छुट्टी ली और हरिद्वार पहुँच गए। यहां उन्हें एकदम नये तरह के अनुभव प्राप्त हुए जिनसे उनके जीवन को एक नई दिशा मिली। आध्यात्मिक तथा वैचारिक प्रशिक्षण के साथ-साथ दैनन्दिन जीवन की व्यावहारिक आवश्यकताओं को समर्पण भाव से पूर्ण करने की दृष्टि भी प्रदान की गई।

आश्रम के पूरे परिसर की साफ-सफाई का समूचा दायित्व प्रशिक्षणार्थियों का था। कैलाश जी इसमें अति उत्साह से बढ़ चढ़ कर भाग लेते। शौचालय पुरानी देशी पद्धति के थे जिनकी सफाई से हर कोई कतराता मगर कैलाश जी आगे होकर उनकी सफाई का जिम्मा खुद लेते। एक बार पहले भी वे इसी कार्य का जिम्मा ले चुके थे, इसलिये उनके लिये यह कोई नई बात नहीं थी। इस कार्य में उन्हें इतना आनन्द आता कि मन ही मन एहसास होता जैसे उनमें कोई नये भाव जाग रहे हों।

शिविर से लौटने के पश्चात् कैलाश जी ने अपने आपको बदला हुआ पाया। जीवन में कुछ करने की एक ललक सी उनमें जग गई। दिन-रात अब वह एक ही बात सोचने लगे कि कुछ नया करना है। इसकी शुरूआत उन्होंने प्रत्येक रविवार को यज्ञ आयोजित कर की। यज्ञ के मंत्रों में जीवन सुधार की व्याख्या होती। देव दक्षिणा देनी पड़ती जिसके अन्तर्गत अपनी एक बुराई का त्याग करना होता था तथा एक अच्छाई ग्रहण करने का संकल्प लेना होता था।

यज्ञ में भाग लेने वाले खुशी-खुशी अपनी बुराईयों का त्याग व अच्छाईयों को ग्रहण करने का संकल्प लेने लगे। यज्ञ के प्रति लोगों की अभिरूचि बढती ही गई। धीरे-धीरे कई अन्य लोग भी अपने यहां यज्ञ करवाने लगे। अब प्रति रविवार एक साथ तीन-तीन, चार-चार जगह यज्ञ होने लगे। कैलाश जी के आनन्द की सीमा नहीं थी। वह प्रत्येक यज्ञ में भाग लेने का भरसक प्रयत्न करते। इसी बीच उन्हें पी एण्ड टी कोलोनी में सरकारी क्वार्टर भी आवंटित हो गया।

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

पाली
श्री कान्तिलाल मुथा,07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
09829769960 C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर,
L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा-311001

बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी,09887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने
बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला,मो. 8952859514,
लेडिज फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड
के सामने यादव धर्मशाला के पास,
बहरोड़, अलवर

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा, 07300227428
के.वी. पब्लिक स्कूल,
35 लादिया,बाग अलवर

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,09828242497
S-C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़
रोड़,झोटवाड़ा, जयपुर 302012

अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,09166190962
कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे,
मदनगंज,किशनगढ़, अजमेर

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,09829960811,
ए.14, 'गिरधर-धाम', न्यू मानसरोवर
कॉलोनी, चित्तौड़ रोड़, बून्दी

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन
मो.-09113733141
C/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान
केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली,
हजारीबाग

रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992262641
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट
राजीव सिनेमा रोड़,
बिजुलिया, रामगढ़

धनबाद
श्री गोपाल कुमार खेंडिया,
9608529923, आजाद नगर
भूलीनगर

मध्य प्रदेश

रतलाम
श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 9752492233,मकान नं. 344,
काटजूनगर, रतलाम

जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी,मो. 9926660739
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन
सिटी,माढ़ोताल, जिला - जबलपुर

भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136, ए-3/302, विष्णु
हाईटेक सिटी, अहमदपुर
रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ,
होशंगाबाद रोड़ जिला - भोपाल

बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,08989609714,
बखतगढ, त.-बदनावर,जि.-धार

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी, मो.नं. - 9422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला

परभणी
श्रीमती मंजु दरड़ा-मो. 09422876343

नांदेड़
श्री विनोद लिंबा राठोड,07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम,मु. पो. सारखानी,
किनवट, जिला - नांदेड़

पाचोरा
श्री सीताराम जी-मो. 9422775375

मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी,न.-028847991
9029643708,10-बी/बी, वाईसराय
पार्क,ठाकुर विलेज कान्दीवली,मुम्बई

भायंदर
श्री कमलचंद लोढा, मो. 8080083655
ए/103, 'देव आंगन' जैन मन्दिर रोड़
बावन जिनालय मन्दिर के पास,
भायंदर (पश्चिम) ठाणे-401101

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट - बिधरी, त. बदसर
जिला हमीरपुर - 176040

श्री रसील सिंह मनकोटिया
मो. 09418061161, जामलीधाम,
पोस्ट-रोपा, जिला-हमीरपुर-177001

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807,गर्ग
मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर
पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662-3
68-ए, नई अनाज मंडी, कैथल

जुलाना मण्डी
श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878,108
अनाज मण्डी, जुलाना,जींद

पलवल
श्री वीर सिंह चौहान
मो.9991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी,
सेक्टर-14, पलवल

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी
स्टोर, दुकान नं. 1डी/12,
एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

करनाल
डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
ओपीपी. गली नंबर 19, गोविंद
डेयरी मेन रोड करण विहार
नियर मेरठ रोड
करनाल 132001

अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930548
मकान नं.- 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी,
अम्बाला केन्ट-133001

नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014
165-हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
नरवाना, जीन्द

गोवा

गोवा
श्री अमृत लाल दोषी,मो. 07798917888
'दोषी निवास' जैन मन्दिर के पास,
पजीफोन्ड, मडगांव गोवा-403601

गुजरात

अहमदाबाद
श्री योगेन्द्र प्रताप राघव,मो. 09274595349
म.नं.: बी-77, गोल्डन बंग्लो, नाना
चिलोड़ा, अहमदाबाद

उत्तर प्रदेश

बरेली
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074,विकास पब्लिक
स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई)
जिला-बरेली

श्री विजय नारायण शुक्ला
मो. 7060909449,मकान नं.22/10,
सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्ट्रीयल कॉलोनी
बरेली

हाथरस
श्री दास बृजेन्द,मो.-09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन,सादाबाद

हापुड़
श्री मनोज कंसल मो.-09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस,कबाड़ी बाजार,हापुड़

गजरौला, अमरोहा
श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा
मो.-08791269705
बांके बिहारी सदन, कालरा स्टेट,
गजरौला, अमरोहा-244235

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल,मो. 09425536801

श्री देवनाथ साहू,मो. 09229429407
गांव- बेला कछार, मु.पो. बालको
नगर, जिला-कोरबा

बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,मो.-09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2,
शान्ति नगर, बिलासपुर

बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000,रामदेव चौक
बालोद, जिला-बालोद

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,मो. 09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52-सी
अपर शिव शक्ति नगर जम्मु-180001

दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा-8447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा-9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
IV/1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क,
D.C.B. ऑफिस के पास,शाहदरा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

महाराष्ट्र

मुम्बई
09529920090,07073452174
09529920088 फ्लेट नं. 5/ई
सुनील कुमार डोकानिया, न्यु ओस्वाल
ओनिक्स, जैसल पार्क, भायन्दर ईस्ट
थाने, 401105

पूणे
09529920093
17/153 मेन रोड, गणेश सुपर मार्केट
गोखले नगर, पूणे-16

राजस्थान

जोधपुर
08306004821
जूनी बागर, महामन्दिर
जोधपुर (राज) 342001

कोटा
07023101172
नारायण सेवा संस्थान, मकान नं.2-बी-5
तलवंडी, कोटा (राज.) 324005

मध्य प्रदेश

ग्वालियर
07412060406, 41 ए ,न्यू शांति नगर,
त्रिवेदी नर्सिंग होम के पीछे,नई सडक,
लश्कर,ग्वालियर 474001

हरियाणा

गुरूग्राम
08306004802, हाउस नं.-1936
जीए,गली नं.-10,राजीव नगर
ईस्ट, माता रोड़, सी.आर.पी.एफ.
कैम्प चौक,गुरुग्राम -122001

हिसार
9257017593,मकान न. 2249,
सेक्टर-14,हिसार 125005

(कर्नाटक)

बेंगलुरू
09341200200,नारायण सेवा संस्थान
40 (12) प्रथम फ्लोर, मॉडल हाउस
कॉलोनी, अपोजिट समना पार्क,
एनआर कॉलोनी, बसवानगुड़ी,
बेंगलुरु-560004

बिहार

पटना
मो.: 7412060405
मकान नं.-23, किताब भवन रोड
नॉर्थ एस.के. पुरी, पटना-13

वेस्ट बंगाल

कोलकाता
09529920097,मकान नं.- 216, बांगुर
एवेन्यू, ब्लॉक-बी, ग्राउण्ड फ्लोर, कोलकाता
(पश्चिम बंगाल) पिन कोड-700055

उत्तर प्रदेश

मेरठ
08306004811, 38, श्री राम
पैलेस, दिल्ली रोड,नियर सब्जी
मंडी, माधव पुरम,मेरठ 250002

लखनऊ
09351230395,09351230393
फ्लेट नम्बर 202,गुरूकृपा अपार्टमेंट
न्यू श्रीनगर आलमबाग
लखनऊ 226005 (उ.प्र.)

पंजाब

लुधियाना
07023101153
381/382, बी-17,
गुलाटी डांस क्लास के पास,
भारत नगर, लुधियाना 141001

चण्डीगढ़
07073452176, 08949621058
मकान नंबर 3468 ग्राउंड फ्लोर,
सेक्टर - 46-सी, चंडीगढ़-160047

असम

गुवाहाटी
09529920089,मकान नं. 07,
भुवन भर्य पथ, सीपीडब्ल्यूडी कार्यालय के
सामने, चंद्रमुख सत्रिया अकादमी के पास,
पोस्ट-बामुनी मैदान, कामरूप मेट्रो,
गुवाहाटी (असम) 781009

गुजरात

सूरत
09529920082,
27, सम्राट टाऊनशिप,सम्राट स्कूल के
पास, परवत पाटीया, सूरत

वडोदरा
09529920081
म. नं.: 1298, वैकुंठ समाज, श्री अम्बे
स्कूल के पास, वाघोडिया रोड,
वडोदरा -390019

अहमदाबाद
09529920080, 08306008208
7/ए कपील कुंज सोसायटी
विजय नगर के पास, मेट्रो स्टेशन
नारंगपुरा, अहमदाबाद (गुजरात)
380016

दिल्ली

रोहिणी
08588835718,
08588835719, बी-4/232
शिव शक्ति मंदिर के पास,सेक्टर-8
रोहिणी, दिल्ली -110085

जनकपुरी, नई दिल्ली
07023101156, 07023101167
सी2/287, 4 फ्लोर, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058

विकासपुरी, नई दिल्ली
09257017592,मकान नं. 342
ब्लॉक-सी, मद्रासी मन्दिर के पास
विकासपुरी 110018

नारायण निःशुल्क फिजियोथेरैपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस
07023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे,
अलीगढ़ रोड, हाथरस

मथुरा
07073474438, मकान नं. 212/53,
राधानगर, भारत पेट्रोलियम अधिकारी
आवास बिल्डिंग,मथुरा (उ.प्र.)

अलीगढ़
07023101169,एम.आई.जी. -48
विकास नगर, आगरा रोड़,अलीगढ़

मध्य प्रदेश

इन्दौर
09529920087,12, चन्द्रलोक कॉलोनी
खजराना रोड, इंदौर-452018

छत्तीसगढ़

रायपुर
07869916950,मीरा जी राव, म.नं.-29/
500 टीवी टावर रोड, गली नं.-2, फेस-2
श्रीरामनगर,पो.-शंकरनगर,रायपुर,छ.ग.

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद
07073474435
श्रीमती शीला जैन नि:शुल्क
फिजियोथेरेपी
सैंटर,बी.-350 न्यू पंचवटी
कॉलोनी, गाजियाबाद -201009

लोनी
07023101163
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल नि:शुल्क
फिजियोथेरेपी सेन्टर, 72 शिव विहार,
लोनी बन्थला, चिरोंडी रोड
(मोक्षधाम मन्दिर) के पास लोनी,
गाजियाबाद

आगरा
07023101174
मकान न. 8/153, ई-3,
न्यू लॉयर कॉलोनी,
पानी की टंकी के पीछे,
आगरा (उत्तर प्रदेश)

गुजरात

राजकोट
09529920083, बी-33,
शिव शक्ति कॉलोनी, जेटको टावर
के सामने, यूनिवर्सिटी रोड, राजकोट
360005

उत्तराखण्ड

देहरादून
07023101175, साई लोक कॉलोनी,
गांव कार्बरी ग्रांट,शिमला बाय पास रोड,
देहरादून 248007

दिल्ली

फतेहपुरी
08588835711, 07073452155
6473 कटरा बरियान, अम्बर होटल के
पास, फतेहपुरी,दिल्ली-6

शाहदरा
बी-85, ज्योति कॉलोनी, दुर्गापुरी
चौक, शाहदरा

हरियाणा

अम्बाला
07023101160,सविता शर्मा, 669,
हाऊसिंग बोर्ड कोलोनी अरबन स्टेट
के पास, सेक्टर-7 अम्बाला

कैथल
8696002432,7023101166,
फेड कॉलोनी, गली नम्बर 3
करनाल रोड़, हनुमान वाटिका के पास
कैथल (हरियाणा)

राजस्थान

जयपुर
09529920089, बद्रीनारायण वैद
फिजियोथेरेपी हॉस्पीटल
एण्ड रिचर्स सेन्टर बी-50-51 सनराईज
सिटी,मोक्ष मार्ग, निवारू झोटवाड़ा,जयपुर

तेलंगाना

हैदराबाद
09573938038,लीलावती भवन,
4-7-122/123 इमामिया बाजार,
कोठी , संतोषी माता
मंदिर के पास,हैदराबाद -500027

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव, वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पुण्यात्माओं की पुण्यतिथि को बनाएं यादगार....

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 रू.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रू.
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 रू.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रू.
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 रू.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रू.
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 रू.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रू.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रू.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रू.

दो जून की रोटी के लिए बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37,000 रू.
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रू.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रू.
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 रू.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
तिपहिया साईकिल	5,000 रू.	15,000 रू.	25,000 रू.	55,000 रू.
व्हील चेयर	4,000 रू.	12,000 रू.	20,000 रू.	44,000 रू.
कैलिपर	2,000 रू.	6,000 रू.	10,000 रू.	22,000 रू.
वैशाखी	500 रू.	1,500 रू.	2,500 रू.	5,500 रू.
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रू.	30,0000 रू.	50,0000 रू.	1,10,000 रू.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 7,500 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 22,500 रू.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 37,500 रू.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 75,000 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 1,50,000 रू.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 2,25,000 रू.

शिक्षा से वंचित आदिवासी बच्चों को शिक्षित करने में करें मदद

एक बालक का 1 माह का शिक्षा सहयोग	1,100 रू.
एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000 रू.
एक बालक का आजीवन पालनहार सहयोग (6 से 18 वर्ष)	1,00,000 रू.

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe Paytm
narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

नारायण महावीर
प्राकृतिक चिकित्सालय

राजस्थान का कश्मीर कही जाने वाली झीलों की नगरी उदयपुर से 15 कि.मी. दूर अरावली पर्वतमाला की सुरम्य वादियों के आंचल में लियों का गुड़ा गांव स्थित नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ परिसर में नारायण महावीर प्राकृतिक चिकित्सालय असाध्य रोगों से ग्रस्त उन महानुभावों को आरोग्य प्रदान कर रहा है जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों से निराश हो चुके थे तथा इन रोगों को अपनी नियति मानकर अभिशप्त जीवन जी रहे थे। ऐसे ही निराश महानुभावों को संस्थान में पधार कर स्वास्थ लाभ लेने का सादर आमंत्रण है।

भर्ती होने वाले रोगियों की दिनचर्या प्राकृतिक चिकित्सक के निर्देशानुसार निर्धारित होती है।

रोगी को उनकी स्वास्थ्य समस्याओं के अनुसार आहार चिकित्सा दी जाएगी।

आवास एवं भोजन की सुव्यवस्था।

नेचुरोपैथी के साथ योगा थेरैपी एवं एडवांस एक्यूपंक्चर थेरैपी भी उपलब्ध है।

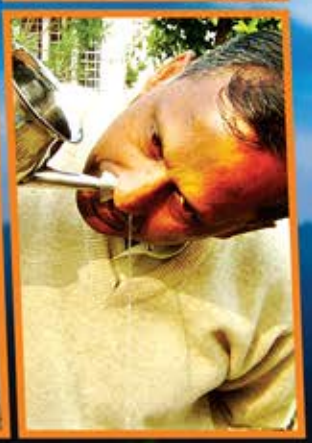

Seva Soubhagya Print Date 1 April, 2025 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404 Postal Reg. No. RJ/UD/29-146/2023-2025. Despatch Date 1st to 7th of every month, Chetak Circle Post Office, Udaipur, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur - 313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages- 20 (No. of copies printed 1,50,000) cost- Rs.5/-